PANTING FILE

Seema Raikwar

GIS

Bed College

Sagar

"कला" "ART"

कला का अर्थ एवं उद्देश्य →

जब कोई व्यक्ति अपनी भावनाओं और इच्छा को किसी वस्तु के रूप मे या चित्र के रूप मे व्यक्त करता है या बनाता है. वह कला कहलाती है। एक छोटी से छोटी आकृति जो स्वयं को या दूसरों को अच्छी लगे कला है। यह आवश्यक नही है कि किसी बड़ी वस्तु का निर्माण करना ही कला है अर्थात कला का कोई निश्चित रूप नहीं होता है। कला तो किसी भी रूप में दिखाई दे सकती है।

कला मानव जीवन का अभिन्न अंग है। कला के बिना मानव रसहीन फल के समान है. मानव जीवन के क्रिया कलापों में कला का पूर्ण समावेश है और एक अच्छा चित्रकार मन की गहराइयों मे चित्रों को संजोता हैं फिर उन चित्रों का मंथन करता है। इस प्रकार अच्छे चित्रों की रचना होती है किन्तु कला की एक शर्त है- "सुन्दर होना पर सत्य होना, असत्य कभी कला नहीं हो सकती।"

कला का उद्देश्य ज्ञान न होकर कुछ उत्पादन या निर्माण करने से होता है। कला की कसौटी कलाकार का कौशल है। कला का लक्ष्य 'करना' है न कि जानना है। चित्रण, संगीत. मूर्तिकला आदि मे निर्माण का दृष्टिकोण प्रधान होता है। कला का मानव, आत्मा और मन से स्थाई रिश्ता है. जिसे कभी अलग नही किया जा सकता. यह स्थाई रिश्ता अपने स्थायित्व के कारण ही एक युग का संदेश दूसरे युग को कला के रूप में देता है। प्राचीन कला ही हमे उस युग की विकास अवस्था, संस्कृति और सभ्यता की कहानी सुनाती है।

हर युग मे कला का विशेष महत्व रहा है यह बात अलग है ~~फिर~~ उसे एक विषय विशेष के रूप में स्थान नहीं दिया गया था. किन्तु आधुनिक युग मे कला के महत्व को पहचानते हुए उसे एक विषय के रूप में विशेष स्थान प्राप्त हो चुका है।

रायबर्न के अनुसार →

"बालक कला के क्षेत्र में सक्रिय रहकर मानसिक अनुभवों के साथ-साथ अन्य अनुभवों की प्राप्ति करता है।"

मैथिलीशरण गुप्त कहते है →

" हो रहा है जो जहाँ सो हो रहा
यदि वही हमने कहा तो क्या कहा
किन्तु होना चाहिए कब क्या कहाँ
व्यक्त करती है कला ही यह यहाँ।"

कला सामग्री तथा टेक्नीक्स
(Art Materials and Techniques)

एक आर्टिस्ट को उसकी आवश्यकतानुसार सामग्री और उपकरणों की आवश्यकता होती है। आर्ट मैटीरियल के शोरूम में हर तरह की सामग्री देखने को मिलती है, लेकिन उनमें से आप वही सामान खरीदें, जिसकी आपको जरूरत हो।

आवश्यक सामग्री →
पेंसिल, कलर्ड पेंसिलें, फेल्ट टिप्स तथा मार्कर्स, इंक पेन, एयरब्रुश, पेंट्स तथा इंक्स, ऑयल पेंट्स, एक्रिलिक पेंट्स, ब्रुश, पेपर आदि।

पेंसिल (Pencils) →
ड्राइंग के लिए प्रारंभिक उपकरण पेंसिल है। ये अनेक प्रकार की होती हैं और लैड के अनुसार वेरी हार्ड (9H) से वेरी साफ्ट (9B) ग्रेडों में उपलब्ध होती हैं।
सॉफ्ट लैड पेंसिलें जो 9B से B ग्रेडों में होती हैं, गहरी (Dark) रेखाएं खींचती हैं और डार्क शेडिंग के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। नम्बर जितना अधिक होगा, पेंसिल उतनी ही सॉफ्ट और अधिक काले लैड की होगी। हार्ड लैड पेंसिलें 9H से H ग्रेडों में उपलब्ध होती हैं। ये सूक्ष्म रेखाएं खींचने और लाइट शेडिंग के लिए प्रयोग की जाती हैं। पेंसिल का नम्बर जितना अधिक होगा, लैड उतना ही ज्यादा हार्ड होगा।
विभिन्न ग्रेडों की पेंसिल से आप इच्छित टोनल प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। प्रत्येक ग्रेड की अपनी डेंसिटी होती है, लेकिन 'प्रभाव' पेंसिल के दबाव पर भी निर्भर है। हल्के हाथ से 'बहुत हल्की टोन' कुछ दबाव बढ़ाने पर 'लाइट टोन' सामान्य पर 'मध्य टोन' दबाव कुछ और बढ़ाने पर 'डार्क टोन' और ज्यादा दबाव पर 'अत्यधिक डार्क टोन' उत्पन्न होती है।
यदि हम विभिन्न ग्रेडों की पेंसिल का इस्तेमाल रेखा खींचने पर टोनल इफेक्ट के लिए करते हैं तो परिणाम निम्नलिखित होगा :

- 2H : बहुत हल्की रेखाएं तथा बहुत हल्की टोन
- HB : हल्की रेखाएं तथा हल्की टोन
- 2B : सामान्य रेखाएं तथा मध्य टोन
- 4B : गहरी रेखाएं तथा गहरी टोन
- 6B : बहुत गहरी रेखाएं तथा बहुत गहरी टोन
- B : पेंसिल हल्की छाया दिखाने के लिए
- BB : पेंसिल इसका उपयोग भी शेडिंग के लिए
- BBB : पेंसिल यह विशेष रूप से काली व मोटी होती है। गहरी शेडिंग में प्रयोग। पेंसिल यह विशेष रूप से काली व मोटी होती है। गहरी शेडिंग में प्रयोग। पेंसिल यह विशेष रूप से काली व मोटी होती है। गहरी शेडिंग में प्रयोग।

ग्लास मार्किंग या कार्बन पेंसिलों से अत्याधिक काली टोन प्राप्त होती है जो पोस्टर या ट्यूब कलर और इंक से मेल खाती है। बड़े पोर्ट्रेट बनाने में विशेष रूप से इनका प्रयोग किया जाता है।
पेंसिल से ग्रेडेशन या टोनल इफेक्ट प्राप्त करने के तीन तरीके हैं :

1. पेंसिल के विभिन्न दबाव

2. विभिन्न ग्रेडों की पेंसिल
3. पेंसिल को एक ही जगह ज्यादा घिसकर, हैचिंग तथा क्रास हैचिंग द्वारा।

कलर्ड पेंसिलें (Coloured Pencils)

कलर पेंसिलों से आप विभिन्न इफेक्ट उत्पन्न कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, पेंसिल पर जितना दबाव दिया जाएगा, रंग उतना ही गहरा होगा। पेंसिल के हल्के-भारी दबाव से टोन में परिवर्तन कर सकते हैं। इस टेक्नीक से अन्य सभी कलर्ड पेंसिलों द्वारा टोनल इफेक्ट उत्पन्न किया जा सकता है। कुछ कलर्ड पेंसिलें पानी में विलयशील होती हैं। यदि आप इनके ऊपर पानी का वाश पेंट करेंगे तो बिल्कुल वाटरकलर जैसा प्रभाव उत्पन्न होगा। पेंसिल शेडिंग पर पानी का ब्रुश फेरने से रंग को मिक्स किया जा सकता है।

फेल्ट टिप्स तथा मार्कर्स (Felt Tips and Markers)

फेल्ट टिप्स और मार्कर्स स्ट्रांग टोन्स के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इनका इस्तेमाल पोस्टरों और कॉमिक स्टाइल ड्राइंगों में किया जाता है।
फेल्ट टिप्स कई प्रकार के टिप्स में उपलब्ध होते हैं। टिप्स जितने फाइन होंगे, डिटेल उतनी ही स्पष्ट होंगी।
फेल्ट टिप्स की भांति ही मार्कर्स पेन भी टिप्स की थिकनैस की वैराइटी में उपलब्ध होते हैं। कुछ में वाटर बेस्ड इंक का प्रयोग होता और अन्य प्रकार के मार्कर्स में स्प्रिट बेस्ड इंक होती हैं।

इंक पेन (Ink Pens)

इंक पेनों का इस्तेमाल आउटलाइनों और छाया के लिए किया जाता है। ये अनेक प्रकार के होते हैं। उत्तम क्वालिटी के पेन टेक्निकल पेन कहलाते हैं, जो काफी कीमती होते हैं। सस्ते पेनों में आजकल प्लास्टिक टिप वाले पेन भी उपलब्ध हैं, जिनके द्वारा फाइन रेखाएं खींची जा सकती हैं।
इनके अलावा फ्री हैण्ड लेटरिंग के लिए विभिन्न साइजों और स्टाइलों के स्पीडबॉल पेन भी आवश्यक हैं, ये डिप-इन-इंक टाइप के होते हैं जिनको पेनहोल्डर में लगाकर इस्तेमाल किया जाता है। अन्य प्रकार के पेनों में 'फाउंटेन पेन बिल्ट-इन इंक' भी हैं, इनमें इंक भरी जाती है या इंक कार्ट्रिज प्रयोग किए जाते हैं। ये विभिन्न साइजों और स्टाइलों में इंटरचेंजेबल निबों के साथ उपलब्ध होते हैं।

एयरब्रुश (Airbrushes)

एयरब्रुश कम्प्रेस्ड हवा द्वारा रंग पेपर की सतह पर डालता है।

स्टिपलिंग ब्रुश

नम्बर 12 ब्रुश

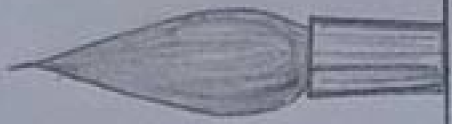

नम्बर 1 ब्रुश

फिल्बर्ट

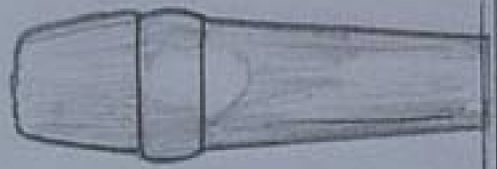

चिजल ऐंड

राउण्ड ब्रुश

इंक पेन

पेंसिल

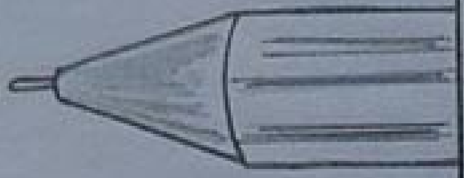

टेक्निकल पेन

मार्कर पेन

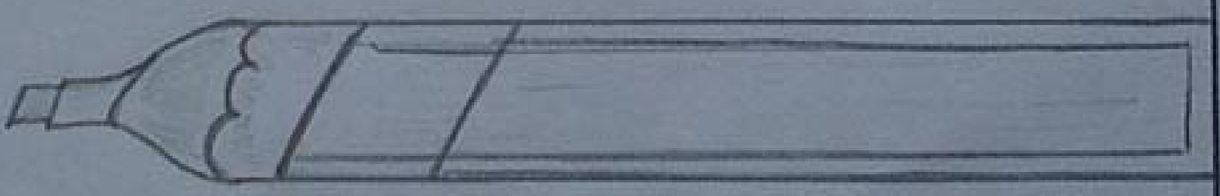

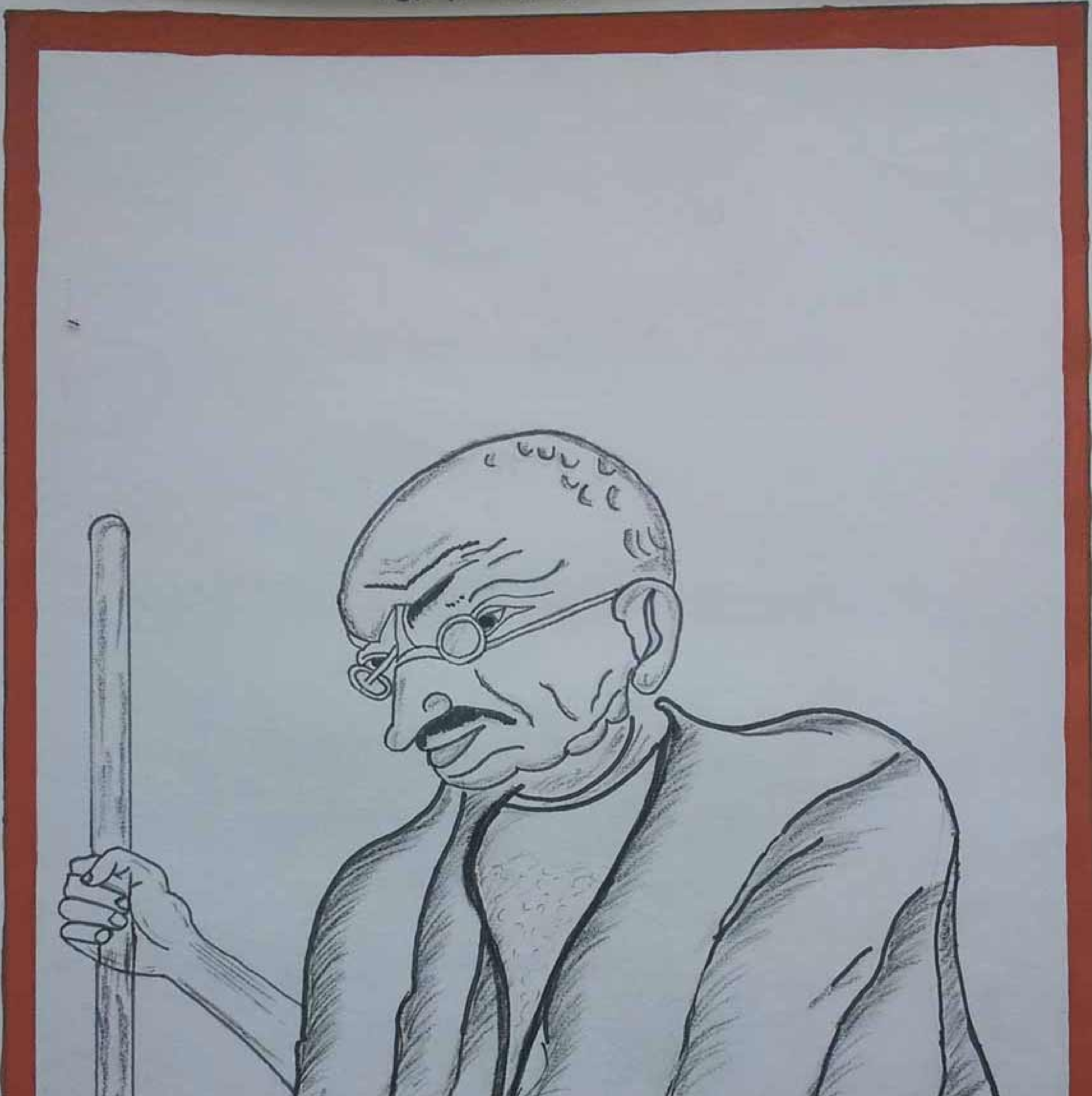

चारकोल स्केच

फल,फूल, सब्जियाँ तथा पत्तियों का चित्रण,
Fruits, flower Vegetables and Leafs Drawing.

विभिन्न प्रकार के पौधो में फूल, पत्तिया विभिन्न प्रकार की आकृतियों में देखने को मिलती है। इनके चित्रण के लिए पौधे के भागो पर ध्यान दें। पौधे के मुख्यत: दो भाग होते है- मूल तन्त्र और प्ररोह तंत्र। मूल तंत्र में जड़ें आती हैं जो पौधे को भूमि में स्थिर रखती हैं। प्ररोह तन्त्र के अन्तर्गत तना आता है जो भूमि के ऊपर सीधा खड़ा रहता है। यह गोल तथा हरा होता है। तने पर गांठे या पर्वसन्धि होती हैं। इन गांठों के बीच के स्थान से पत्तियां निकलती हैं। पत्तियों के अतिरिक्त तने पर कलिकाएं, शाखाएं, फूल तथा फल होते है।

पत्तियाँ (Leaves)

पत्तियाँ →

पत्तियां तने की पर्वसन्धि से विकसित होती हैं। प्रत्येक पत्ती के तीन भाग होते हैं- पत्राधार, डण्ठल तथा पत्रदल। पत्ती का तने या शाखा से जुड़ा भाग पत्राधार कहलाता है। डण्ठल तथा पत्रदल। पत्ती का तने या शाखा से जुड़ा भाग पत्राधार कहलाता है। डण्ठल, पतला, लम्बा होता है जो पत्राधार को पत्रदल से जोड़ता है। पत्रदल से जोड़ता है। पत्रदल पत्ती का हरा फैला हुआ भाग होता है जिसके मध्य में डण्ठल से लेकर शीर्ष तक एक मोटी धारा होती है जिसे मध्य शिरा कहते हैं। मध्य शिरा से पार्श्व शिराएं निकलती है। आकृति, शीर्ष, तट तथा शिराविन्यास की दृष्टि से पत्रदल में अनेक विविधताएं पाई जाती हैं।

पत्तियों की आकृति विभिन्न प्रकार की होती है जो पौधों को पहचानने में सहायक होती है। पत्रदल का किनारा कटाव के आधार पर पत्तियों को एक विशिष्ट आकार देता है।

फूल (Flowers)

फूल तने या उसकी शाखाओं पर लगे रहते हैं। सभी पुष्प पत्तियां पुष्प-वृन्त के ऊपर फूले हुए भाग पर स्थिर रहती हैं। पुष्पवृन्त के इस फूले भाग को पुष्पासन कहते हैं। पुष्प-पत्र चक्रों में पुष्पासन पर लगे रहते हैं। पुष्प-चक्र चार प्रकार के होते है- बाह्य दल पुंज, दल पुंज, पुमंग तथा जायांग। पुमंग में पुतन्तु और पराग कोष होते हैं। पौधों में फूल विशेष प्रकार के पुष्पक्रमों में व्यवस्थित रहते हैं। प्रत्येक फूल का आकार, प्रकार और रंग-रूप अलग-अलग होता है। कुछ फूल अण्डाकार, त्रिभुजाकार, पंच भुजाकार या विशिष्ट आकार के होते हैं। फूलों के चित्रण में इनके आकार और रंग का विशेष महत्व है।

फल (Fruits)

फलों का चित्रण एक दिलचस्प विषय है। स्टिल-लाइफ में विभिन्न फलों को सजाकर आकर्षक चित्रण किया जाता है। केला, आम, अमरूद, अनार

ट्युलिप

गार्डन लिली

"जासुन फूल"

"फल"

आम

अंगूर

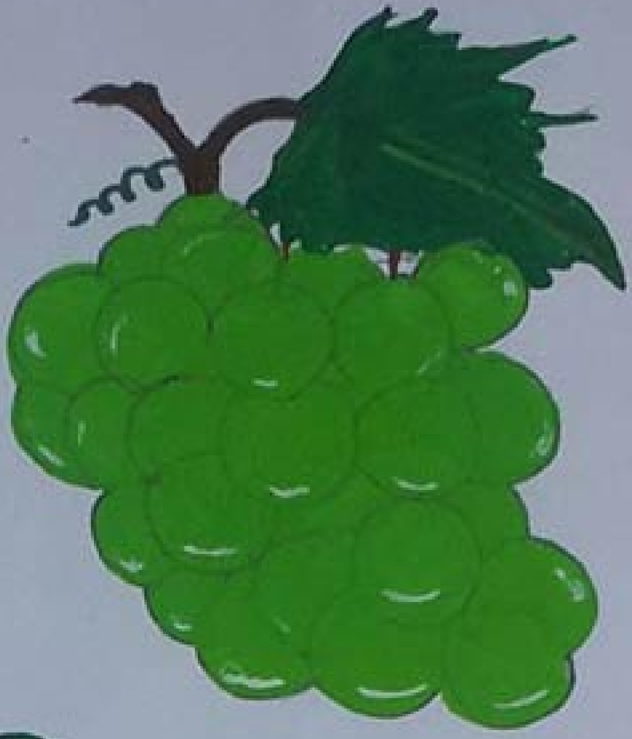

आलूबुखारा

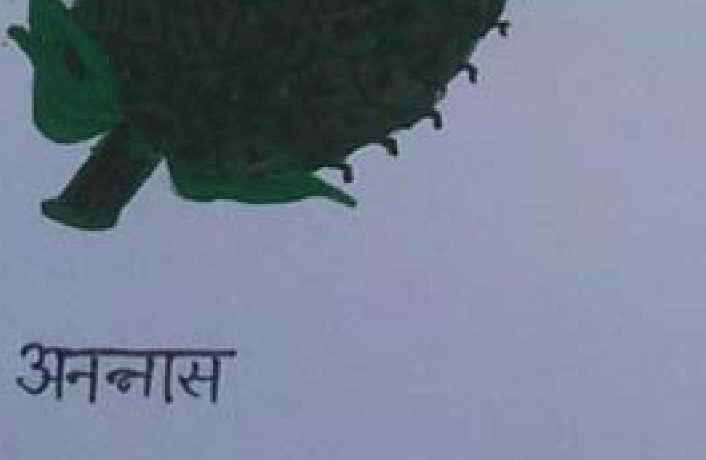

अनन्नास

सीताफल

কমল পুষ্প

" विभिन्न प्रकार की पत्तियाँ "